IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दिनेश पालीवाल की कहानियों में नारी की स्थिति एवं परिवर्तित भूमिकाएं

शोधार्थिनी–मंजूबाला
शोध केन्द्र–किशोरी रमण पी.जी. महाविद्यालय, मथुरा
शोध निर्देशिका–डॉ॰ कामना पण्ड्या

सृष्टि के निर्माण से लेकर इसके अस्तित्व तक नारी की महत्वपूर्ण भूमिका है। लेकिन भारतीय समाज नारी की महत्ता को सदियों से नगण्य ही समझता आया है। भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज है, जिससे नारी को दूजे दर्जे की एक वस्तु मात्र समझा जाता है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक नारी की स्थिति में कोई अधिक परिवर्तन नहीं आया है। नारी के सामर्थ्य को कमतर आँका जाता है। आधुनिक नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई है। आज वह किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से पीछे नहीं है। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में नारी ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। राजनीति, शिक्षा, सिनेमा, पत्रकारिता आदि कोई भी क्षेत्र स्त्री के दायरे से बाहर नहीं है। समाज का भी दायित्व बनता है कि नारी चेतना की आवाज को और अधिक बुलंद करना चाहिए। दिनेश पालीवाल ने अपनी कहानियों में नारी की विभिन्न भमि काओं को सजीदगी से उकेरा है। इनकी कहानियों में नारी की विभिन्न परिवर्तित भूमिकाएं मिलती है।

पत्नी : पुरानी और नई भूमिका

प्राचीन काल से ही पत्नी की भूमिका अपने परिवार के लिए अति महत्वपूर्ण रही है। लेकिन वर्तमान समय की अपेक्षा उसकी जिम्मेदारियों व कर्त्तव्यों का दायरा सीमित था। उसका कार्य क्षेत्र घर तक ही सीमित था। बाहरी कामकाज पुरूषों के हाथ में था।

पुरूष सत्तात्मक साम्राज्यों में स्त्री की भूमिका गौण होती थी। प्रत्येक महत्वपूर्ण फेसले पुरूषों द्वारा लिए जाते थे। परिवार में पत्नी का कार्य बच्चों का पालनदृपोषण करना, पशुओं की देखभाल करना एवं कृषि कार्यों में सहयोग करना था। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक पत्नी की भूमिका में काफी अन्तर देखने को मिला है। परिवार को पालने की जिम्मेदारी पति–पत्नी पर समान रूप से आ गई है। दिनेश पालीवाल की 'नीच' कहानी में घरेलू नौकर न मिलने के कारण बीवी की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है। ''आजकल की बीवियाँ अगर जमाखर्च में हुए दा–तीन बच्चों का ही काम ठीक से और समय से करके दे दे और आपको दफ्तर जैसी जगह वक्त पर पहुंचने के साथ दाना पानी चुगा कर टिफिन थमा दे, वही बहुत है। बीवी नाम की जो चीज आजकल हम सबके घरों में पाई जाती है, वह पता नहीं

किस–किस काम में अपनी जान हलकान किए रहती है। बच्चों के गूदमूत के ऊपर आने के बाद वह उन्हें नहलाती–धुलाती है, आपके कपड़े गुसलखाने में लगाती है, उसके बाद बच्चों को स्कूल भेजती है। फिर चौका चूल्हा समेटती है।''[1]

इनकी 'उठो सुचेता चलो' कहानी की नायिका सुचेता सरकारी अध्यापिका है, जो घर से बहुत दूर नौकरी करती है। रोज सुबह चार बजे ट्रेन में बैठना व रात को आठ बजे 'ार पहुंचना, उसकी दिनचर्या का हिस्सा है। उसकी अति व्यस्त दिनचर्या में उसके पास आराम के लिए बिल्कुल भी समय नहीं है। 'सुचेता' आधुनिक पत्नी की भूमिका में है। जो अपने पति के साथ मिलकर बराबर परिवार की जिम्मेदारियां निभा रही है। अतः पत्नी की भूमिका परिवार में ग्रामीण से लेकर नगरों व महानगरों तक अति महत्वूपर्ण है। पत्नी परिवार की धूरी है।

प्रेमिका

प्रेमिका के रूप में नारी को संसार की सुंदर कृति माना है। समाज में नारी के विविध रूप हैं, जिसमें प्रेमिका होना सर्वथा अलग है। इस रूप में उसके प्रेमी के लिए उसकी महत्वपूर्णता बढ़ जाती है। प्रेमी अपने प्रेम के वशीभूत दुर्लभ कार्य भी करने को तत्पर रहता है, वह अपनी प्रेमिका को संसार के समस्त सुखों से परिपूर्ण करना चाहता है। अतरू प्रेमिका के रूप में स्त्री ने समाज में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। इनकी कहानी 'उस पड़ाव पर' में अधेड़ नायक व युवा नायिका 'उमा' के प्रेम प्रसंग को दर्शाया है। नायक काफी लम्बे समय बाद अपनी प्रेमिका से मिलता है। 'उमा' ने प्रेमिका के रूप में अपने प्रेमी से न्याय किया है।

''कितनी बार कहूँ आप से.....? आपको विश्वास क्यों नहीं होता? आपको भूलकर जी सकती हूँ मैं.....? हँस दी थी उमा, ''आपने भूलकर ही रास्ते दिखाए.....क्या थी मैं? कुछ भी तो नहीं। जो कुछ हूँ, सब आपकी वजह से और आप को कितना याद करती हूँ, यह कलेजा चीर कर दिखाना पड़ेगा क्या?''[2]

दिनेश पालीवाल ने अपनी अनेक कहानियों में नायिका को प्रेमिका के रूप में दर्शाया है। वे सफल प्रेम कहानियों के लेखक कहे जा सकते हैं।

रखैल

'रखैल' शब्द उस स्त्री के लिए प्रयोग किया जाता है, जो बिना शादी किए किसी पुरूष के साथ पत्नी की तरह रहे। ऐसी स्त्रियों की समाज में कोई इज्जत नहीं होती और उन्हें अपनी इज्जत की कोई परवाह भी नहीं रहती। स्त्री के लिए 'रखैल' शब्द अपमानसूचक होता है लेकिन वर्तमान में ऐसे रिश्तों की बहुलता है, जिनमें शादी को अनिवार्य नहीं समझा जाता।

दिनेश पालीवाल की 'दीमक' कहानी में कावेरी अपने पति के अवैध संबंध से दुरूखी है। वह अपने पति की रखैल से छुटकारा पाना चाहती है लेकिन उसे स्वयं 'ार छोड़ कर जाना पड़ता है। ''पहले तो वह सोचती रही कि उनकी

इधर–उधर मुँह मारने की आदत कुछ समय बाद छूट जाएगी। अभी जवान खून है, चढ़ती उम्र का जोश है, इस उम्र में पुरूषों को कम ही होश रहता है। खासकर जब आमदनी अच्छी हो, नौकरी अच्छी और पद प्रतिष्ठा खूब हो और दफ्तर व जिंदगी में चहकतीदृमहकती लड़कियों, युवतियों की कोई कमी न हो।''[3]

इस प्रकार एक हँसते–खेलते परिवार के टूटने की वजह पर स्त्री प्रेम है, जिसका परिणाम पूरे परिवार को भुगतना पड़ता है।

अशिक्षित नारी

अपने वर्चस्व को स्थापित करने के लिए हर एक नारी को सं'ार्ष करना पड़ता है, लेकिन अशिक्षित नारी के लिए यह समस्या बहुत बड़ी बन जाती है। वह अपनी रोजी–रोटी के लिए मेहनत–मजदूरी के अलावा अन्य काम करने में असमर्थ है। समाज में उसका शोषण होता है, क्योंकि वह अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं है। 'औरत होने का दुःख' कहानी की नायिका सल्लो अशिक्षित व निम्न वर्ग की महिला है। उसका पति शराबी है, इसलिए वह घास बेचकर अपने परिवार का पेट पालती है, इसके लिए अनेक तरह की समस्याएं बनी हुई हैं।

''पता नहीं कब तक ग्राहक फंसे और उसकी घास बिके। चार पैसे मिले और वह उन्हें फटी धोती की अंटी में खोंस घर पहुंचे। तब खाने–पीने के सामान की जुगत करे। आदमी को तो इससे कोई मतलब नहीं कि आटा–दाल–साग कहाँ से आता है, नमक तेल का इंतजाम सल्लो कैसे तिल–तिल कर मरती हुई करती है।''[4]

अशिक्षित स्त्री के सामने रोजी–रोटी का जुगाड़ भी चुनौती बनकर सामने खड़ा है।

शिक्षित एवं आत्मनिर्भर नारी

आधुनिक नारी समाज में अपना वर्चस्व स्थापित करने में सफल रही है। वह पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर व स्वाभिमानी बन गई है। अब उसे प्रत्येक कार्य के लिए पुरूष की सहायता की आवश्यकता नहीं है। शिक्षित नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चलने में समर्थ है। वह एक तरफ अपनी घर गृहस्थी संभालने में समर्थ है तो वहीं दूसरी ओर नौकरी करके अपने परिवार को पाल भी रही है। 'एक कहानी' की नायिका अपने पति को कर्ज से उबारने के लिए नौकरी करने का निश्चय करती है। ''मैं कम्प्यूटर जानती हूँ हिसाब–किताब अंग्रेजी में रखना सीख लिया है। एक रेस्तरां में पार्ट टाईम जॉब मिल सकता है, शुरू में ज्यादा नहीं देंगे, पर अगर उनका काम अच्छी तरह किया तो वे स्थाई रूप से रख लेंगे, यह कह रहे हैं।''[5]

एक शिक्षित नारी अपने परिवार का दायित्व पुरूष की तरह ही संभाल सकती है। वह किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से कम नहीं है।

परित्यक्ता

'यत्र नार्यस्तु पूज्यते तत्र रमन्ते देवता' यह वाक्य भारतीय संस्कृति का ध्येय वाक्य है। 'जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का निवास होता है।' इस सिद्धान्त को मानने वाला समाज आज स्त्रियों को इतने सम्मान के काबिल नहीं समझता। पुरूष प्रधान समाज में स्त्री का बलात्कार होने पर इसका जिम्मेवार उसे ही समझा जाता है। दाम्पत्य जीवन में भी छोटी सी गलती की सजा एक स्त्री को ही भुगतनी पड़ती है। इसके परिणामस्वरूप उसे परित्यक्ता की जिंदगी गुजारनी पड़ती है। 'टुकड़े–टुकड़े सच' कहानी की नायिका नौकरी कर अपने पति व एक बच्ची का पालन पोषण करती है। उसके बेरोजगार पति स्वयं को हीनभावना का शिकार करते हैं। जिसका परिणाम नायिका को ही भुगतना पड़ता है, नायिका का पति उसे छोड़कर चला जाता है। ''और वह क्षण मुझे स्मरण हो आया.....जब मुझे लगा था कि कहीं कुछ ऐसा हो गया है कि बीच का रेशमी धागा टूट गया है हालांकि बात बहुत मामूली थी इतनी सी बात पर उसे इतना सीरियस नहीं हो जाना चाहिए था।''[6]

इस प्रकार परित्यक्ता नारी की स्थिति एवं परेशानियों को दिनेश पालीवाल ने कहानियों के माध्यम से बताने का प्रयास किया है।

विधवा

नारी के इस रूप को मध्यकाल में समाज के लिए अशुभ माना जाता था। उस समय विधवा स्त्री को दूसरा विवाह करने का अधिकार नहीं था। उन्हें समाज के नियमों के अनुसार एकाकी जीवन जीना पड़ता था, उन्हें शुभ कार्यों से दूर रखा जाता था। मध्यकाल से ही सती प्रथा का प्रचलन था जिसमें विधवा स्त्री अपने पति की मृत्यु पर उसके साथ ही जल जाती थी। वैसे तो प्रत्येक काल में ही स्त्री का जीवन पुरूष की अपेक्षा कष्टप्रद रहा है, प्रत्येक नियम और सामाजिक बंधन स्त्री पर ही लागू होते हैं। वर्तमान समय में भी विधवा स्त्री की स्थिति शोचनीय ही है, उसके सामने अपने परिवार को पालने की जिम्मेदारी आ जाती है, समाज की नजर हर समय उस पर रहती है। 'सिर का साया' कहानी की सरबतिया विधवा जीवन जी रही है। वह अपने तीन बच्चों के

साथ बेहद गरीबी में जीवन यापन कर रही है। वह अपने बच्चों की छोटीदृछोटी इच्छाएं भी पूरी नहीं कर पाती। ''मर'ाट के नाम से ही उसकी रूह काँप जाती है। बच्चों के बाप को भी वह अकेली ही ले गई थी मर'ाट। कोई संग नहीं गया था। औरत जात..... उसने कौन कभी मुर्दे फूँके थे? पता भी नहीं था कैसे क्रिया कर्म किया जाता है। बस किसी तरह पसीने से लथपथ चिता चिन दी और उस पर रखकर आग लगा दी।''[7]

इस प्रकार निम्न वर्ग की विधवा स्त्री का जीवन तो बेहद कष्टप्रद है।

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि दिनेश पालीवाल ने किसी विशेष विमर्श के लेखक न होते हुए भी अपनी कहानियों में स्त्रीदृविमर्श को संजीदगी से उकेरा है। नारी को लेकर उन्होंने तरहदृतरह की भूमिकाएं बनाई और अपनी कहानियों में नारी की समस्या को केन्द्र बनाया। उन्होंने समाज में नारी की स्थिति के साथदृसाथ उसकी बदलती भूमिकाओं को अपनी कहानी के माध्यम से पाठकों के समक्ष रखा है। समाज की रूढ़िवादी मान्यताओं को मानने वाली अनपढ़ एवं अशिक्षित नारी के साथदृसाथ आधुनिक नारी की आधुनिक सोच को अपने कथादृसाहित्य में स्थान दिया है। कुछेक कहानियों को छोड़ दें तो इनकी कहानियों में नारी का प्रखर स्वर मिलता है। इनकी स्त्री पात्र अपने जुल्मों एवं ज्यादतियों के विरूद्ध आवाज उठाती है। उन्होंने पुरूषों के वर्चस्व को चुनौती दी है। सामाजिक मुद्दों में दलाव के साथदृसाथ अपनी मानसिकता में परिवर्तन कर रही है। आधुनिक नारी स्वयं को अबला कहलाना पसंद नहीं करती बल्कि अपनी सुदृढ़ सत्ता स्थापित करना चाहती है। दिनेश पालीवाल की प्रत्येक कहानी में स्त्री की भूमिका भिन्नदृभिन्न मिलती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि इनकी कहानियों का कथानक स्त्रीदृविमर्श से जुड़ा हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- ढ़लते सूरज का अंधेरा, दिनेश पालीवाल, प्रथम संस्करण–1986, साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली–110006, पृष्ठ सं. 63
- दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़की, दिनेश पालीवाल, प्रथम संस्करण–2016, निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा, पृष्ठ सं. 71
- छोटे शहर की लड़कियां, दिनेश पालीवाल, प्रथम संस्करण–2015, बोधि प्रकाशन, जयपुर–302006, पृष्ठ सं. 161
- बूढ़े वृक्ष का दर्द, दिनेश पालीवाल, प्रथम संस्करण–2015, लाईब्रेरी बुक सेंटर, मालीवाड़ा, दिल्ली–110006, पृष्ठ सं. 19
- छोटे शहर की लड़कियां, दिनेश पालीवाल, प्रथम संस्करण–2015, बोधि प्रकाशन, जयपुर–302006, पृष्ठ सं. 123
- अखण्डित इन्द्रधनुष, दिनेश पालीवाल, संस्करण–1992, लाईब्रेरी बुक सेंटर–1458, दिल्ली–110006, पृष्ठ सं. 25
- बूढ़े वृक्ष का दर्द, दिनेश पालीवाल, प्रथम संस्करण–2015, लाईब्रेरी बुक सेंटर, मालीवाड़ा, दिल्ली–110006, पृष्ठ सं. 33